

त्याग और संयम की आराधना आवश्यकः आचार्यश्री महाश्रमण केलवा में चातुर्मास, पर्युषण महापर्व का छठा दिन जप दिवस के रूप में मनाया, अर्हत वंदना की ओर ध्यान आकृष्ट करें श्रावक समाज

## केलवा: 31 अगस्त

तेरापंथ अधिष्ठाता आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा कि व्यक्ति को जीवन में त्याग और संयम की साधना के प्रति सदैव तल्लीन रहना चाहिए। साधना, ध्यान और आराधना की प्रक्रिया सतत् रहने से हमें आत्मानुभूति का अहसास होता है। हम भीतर से स्वयं को ज्ञान रूपी खजाने से मजबूत बनाएंगे तो इसकी जीवन में श्रेष्ठ अनुभूति होगी। उक्त उद्गार आचार्यश्री ने यहां तेरापंथ समवसरण में चल रहे चातुर्मास में बुधवार को पर्युषण महापर्व के दौरान जप दिवस के अवसर पर देशभर से आए श्रावक—श्राविकाओं के समक्ष व्यक्त किए।

उन्होंने कहा कि एकाग्रचित्त होकर ध्यान—साधना करने से मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। जो व्यक्ति आत्मीयता के बलबूते आराधना करता है उसे निर्वाण की प्राप्ति होती है। श्रावक—श्राविकाओं से आह्वान किया कि वे श्रेष्ठ संस्कारों को अपने जीवन में उतारकर सतत् धारा से उपासना करें और आगे बढ़े। जिस व्यक्ति का ध्यान धर्म और समाज की ओर जाग्रत है उसे आत्मिक सुख अवश्य मिलता है। इसके लिए आवश्यक है कि वह मन को स्थिर रखकर ईश्वर का ध्यान करें। आचार्यश्री ने कहा कि आज हम जप दिवस मना रहे हैं। इसका हमारे जीवन में एक अलग ही स्थान है। हम आगम के स्वाध्याय के प्रति सजग हो। समय बीतता जा रहा है। हम इसके साथ नहीं चलेंगे तो यह आगे निकल जाएगा और हम पीछे रह जाएंगे। इसलिए बड़ों की आराधना में रहे। जप से मनुष्य उत्तम साधना और लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। आज का दिन भवित के प्रयोग का दिवस है। हमारे कर्मों की निर्जरा हो और परम की प्राप्ति हो। आत्म कल्याण के लिए इस दिशा में ध्यान देने की आवश्यकता है। तप करते समय व्यक्ति को इस बात का अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि वह किसी पुस्तक का पठन न करें। परस्पर बातचीत और व्यक्तिगत चर्चा करना भी गलत है। हमें जागरूकता के साथ अर्हत वंदना का प्रयास करना चाहिए। पाप कर्म की अधिकता को आचार्यश्री ने नरक में जाने का द्वार बताया और एक प्रसंग प्रस्तुत करते हुए कहा कि मनुष्य को कभी ऐसा कृत्य नहीं करना चाहिए, जिससे स्वयं के साथ दूसरों को भी नुकसान पहुंचे। पापकर्म

के करण व्यक्ति नरक में जाने के बाद कभी मनुष्य अथवा देवता के रूप में जन्म नहीं ले सकता। हम ऐसा काम करने का प्रयास करें कि आत्मा की अनुभूति के साथ—साथ परिवार और समाज के विकास का मार्ग प्रशस्त हो सके। गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के समय अर्हत वंदना को लेकर एक पुस्तक आई थी। इसमें इस वंदना के संदर्भ में विस्तार से विवेचन किया गया था। इसे वे महत्व देते थे। परिवार के सदस्यों के साथ भी इस तरह की वंदना की जाती है तो भी बेहतर है।

### नाश्ते के पूर्व हो नवकार मंत्र का जाप

आचार्यश्री ने श्रावक—श्राविकाओं से आह्वान किया कि वे प्रतिदिन सुबह नवकार मंत्र की माला फेरने की क्रिया पूर्ण कर लें। इसमें यह प्रयास करने की आवश्यकता है कि हम रोज नाश्ता करने के पूर्व ही इस मंत्र का जाप करें। उस समय यह सोचने की जरूरत नहीं है कि जाप में विलंब होने से नाश्ता करने का समय निकल न जाए। हमें पेट की नहीं मन की क्षुधा शांत करने की महत्ती आवश्यकता है। उन्होंने एक दिन में एक ही बार भोजन करने की प्रवृत्ति को भी अच्छी साधना के रूप में प्रतिपादित करते हुए कहा कि साधना भी अनेक तरह से हो सकती है। जिसके लिए मन करें उसी के अनुरूप करने का प्रयास करने की आवश्यकता है। साधु—साधियों भी इस बात की ओर सदैव सजग रहे कि वे जितनी तपस्या और आराधना कर रही हैं। उसकी सिद्धि हो रही अथवा नहीं। वे इसके प्रति कितना तल्लीन हैं। इसका विवेचन किया जाए।

### निकम्मा नहीं, कर्मशील बने

आचार्यश्री ने साधु—साधियों व श्रावक समाज से आह्वान किया कि वे सदैव कर्मशील बनने का प्रयास करें। काम तो बहुत है, लेकिन उसे बाद में कर लूंगा की प्रवृत्ति नहीं बनाएं। इस तरह की आदत हमें निकम्मा बनाती है। आचार्य कालूगिरी ने भी कालांतर में कहा था कि साधु किसी काम में नियोजित न हो तो उसे कम से कम एक काम दे दिया जाए, ताकि वह संयम की साधना को आगे बढ़ाने का प्रयास करता रहे। उन्होंने तपस्या को भी एक साधना बताते हुए कहा कि श्रावक समाज उपवास, तेला, बेला करें। इसका प्रयोग भी होना चाहिए। यह सब करने में कोई कठिनाई हो तो लोकार्ची करने का अभ्यास किया जाना चाहिए। नवकार मंत्र का उच्चारण और नवकारसी की आराधना करने पर आचार्यश्री ने विशेष जोर दिया। साथ ही कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने ध्यान को तीन भागों में विभक्त किया था। उन्होंने एकांतयद्र को परिभाषित करते हुए कहा था कि इसमें व्यक्ति विभिन्न आलांबनों की ओर घूमता है। एकाग्रचित्त होकर की गई आराधना से व्यक्ति का मन इधर—उधर भटकता नहीं है। एकाग्रता से

सिद्धों की भक्ति करने की आज के परिवेश में महत्ती आवश्यकता है। शेष तीसरी में व्यक्ति का ध्यान न तो साधना की ओर रह पाता है और न ही संयम की ओर। आचार्यश्री ने जीवन के अंतिम समय में संथारा ग्रहण करने को आवश्यक बताते हुए कहा कि त्याग और संयम की आराधना करते हुए हम शरीर को त्यागें। इससे हमारी आत्मा को शांति मिल सकेगी। इस अवसर पर मंत्री मुनि सुमेरमल ने श्रावक समाज को तप, जप और आराधना में तल्लीन रहने की प्रेरणा दी। संयोजन मुनि मोहजीतकुमार ने किया।

## तपस्त्रियों का प्रत्याखान

तपस्या व्यवस्थापक मुनि प्रसन्नकुमार ने बताया कि आचार्यश्री ने आज हेमलता इंटोदिया की 8, सुन्दरदेवी की 7, मध्यप्रदेश के झाबुआ की शर्मिला कोठारी की 11, पीपलीनगर की सुशीला बोहरा की 7, गोरेगांव के ललित मादरेचा की 13, गुजरात के भरुच की अंगूरबाला बरमेचा की 14, नरदास का गुडा की सवितादेवी की 15, सुनीता भटेविया की 6, खरनोटा के अशोक गांधी व हंसादेवी गांधी की 6, लोबोडी की कैलाशदेवी सिंघवी की एकान्तर में 6, कांकरोली की मंजूदेवी की 7, लांबोडी के कल्पेश की अठाई, केलवा की दर्शना बोहरा की 8, अनिता बोहरा की 7, भीलवाडा की रचना सुराणा की 6, लांबोडी के संपतलाल सोलंकी की 6, पेटलावद की संगीता बीकानेरिया की 6, बीस सालों से तपस्या कर रहे शांतिलाल सोलंकी की 29 तथा प्रायः हर गुरुदेव के चातुर्मास में 22 वर्षों से अठाई कर रहे हाल दिवेर मुंबई निवासी किस्तूरचंद डूंगरवाल का 42 प्रहरी चौबंध के बाद 8 का प्रत्याखान किया गया।